खेता भाई के कार्य हेतु अरब को गए

सम्वत सत्रह सौ तिलोत्तरे, हुक्म हुआ श्री राज ।
गांग जी भाई के काम को, तुम जाओ श्री मेहेराज ॥१॥

संवत् १७०३ में धनी श्री देवचन्द्र जी ने श्री मेहेराज ठाकुर को श्री गांग जी भाई के कार्य के लिए अरब जाने का आदेश दिया ।

खेता भाई गांगजीय का, गया है बरारब ।
पच्चीस वर्ष इनको भये, तुम सिताब जाओ अब ॥२॥

गांगजी भाई का भाई खेताभाई जो पच्चीस वर्ष से सांसारिक धन्धे के वास्ते अरब गए हुए हैं, उनको माया से निकालने के लिए तुम शीघ्र अरब जाओ ।

जो ए आवे साथ में, तो सेवा होये श्री राज ।
सो सोभा होए तुमको, पूरे होएं सब काज ॥३॥

यदि उसकी आतम आपके द्वारा जाग्रत हो गई तो श्री राजजी महाराज की सेवा का बहुत बड़ा कार्य होगा । इस कार्य की शोभा आपको मिलेगी तथा गांगजी भाई के भी सब कार्य पूरे हो जायेंगे ।

श्री देवचन्द्र जी ने कहया, सो मान लिया हुकम ।
नाव चलत बरारब, तामें बैठो तुम ॥४॥

जैसे ही धनी श्री देवचन्द्र जी का हुक्म हुआ तो उसे शिरोधार्य कर अरब जाने के लिए तुरन्त तैयारी कर ली । श्री देवचन्द्र जी ने कहा कि नवतनपुरी से नाव सीधी अरब जाती है, उसमें तुम बैठ जाओ ।

माह फागुन के बीच में, नाव चले जब ।
सो चालीस दिन में पहुंच ही, जाए बरारब तब ॥५॥

फागुन के महीने में नाव पर सवार हुए और चालीस दिन की समुद्री यात्रा के पश्चात अरब पहुंच गए।

खेते को आए मिले, दई पाती हाथ ।
बहुत सुख पाइया, राखे अपने साथ ॥६॥

वहां खेता भाई का पता पूछ कर उनसे मिलाप किया और गांगजी भाई द्वारा भेजा हुआ पत्र उनको दिया । खेता भाई उस पत्र को पढ़ कर बहुत प्रसन्न हुए और मेहेराज ठाकुर को अपने साथ रख लिया।

Nijanand App

कारभार बखार का, सारा सौंप दिया ।
तुम नवतनपुरी को चलो, दुनी बहुतक जमा किया ॥७॥

खेता भाई जी ने अपने व्यापार का कुल कार्यभार श्री मेहेराज ठाकुर को सौंप दिया । तब कार्य करते समय भी श्री मेहेराज ठाकुर खेता भाई को ज्ञान चर्चा सुनाते हैं कि तुमने बहुत धन सम्पत्ति इकट्ठी कर ली है । अब तुम इस धन को लेकर नवतनपुरी चलो ।

श्री तारतम की बातें, सुनाई बहुतक ।
उनको छांट न लागहीं, सब कही अपनी बीतक ॥८॥

श्री मेहराज ठाकुर उनको क्षर, अक्षर और अक्षरातीत के भेद तथा पारब्रह्म की पहचान से सम्बन्धित बहुत वाणी चर्चा सुनाते हैं कि माया मिथ्या है तथा अखंड सुख तो परमधाम में ही हैं । परन्तु खेताभाई को एक शब्द की भी चोट नहीं लगी, उलटा कितने संकटों से माया इकट्ठी की है उसका ही राग अलापता रहता है ।

इनको उत ले चलों, तो सेवा होय श्री राज ।
भाई है गांगजीय का, इन से होत है काज ॥९॥

तब श्री मेहेराज ठाकुर जी कहते हैं इस सारे धन को जो आपने कमाया है, उसे नवतनपुरी ले चलें। इससे आपके परिवार तथा भाई के कुटुम्ब का पालन होगा तथा श्री राजजी महाराज की सेवा का तुम्हें काम मिलेगा ।

चार बरस परवारते रहे, बरारब जब ।
खेता पहुंचा अपने ठौर को, मौत हुआ तब ॥१०॥

श्री मेहेराज ठाकुर चार वर्ष तक बराबर अरब में खेता भाई के व्यापार के कार्य को समेटने में ही लगे रहे । एक दिन श्री मेहराज ठाकुर जब बाहर गए हुए थे तो पीछे से खेता भाई की मृत्यु हो गई । वह अपने कर्मों के अनुसार स्वर्ग सिधारे ।

माल मता बखार पर, हुई हाकिम की मोहोर ।
ए तो रहे बाहिर, किया हाकिम नें जोर ॥११॥

श्री मेहराज ठाकुर के घर न होने के कारण से खेताभाई जी के गोदामों पर वहां के हाकिम शेख सल्लाह ने लावारिस सम्पत्ति समझ कर अपनी सील (मोहर) लगा दी ।

Nijanand App

तब उन हाकिम ने, बुरी करी नजर ।
टरे पीछली रात को, पहाड़ में भई फजर ॥१२॥

जब मेहराज ठाकुर वापिस आये तो उन्होंने वहां के हाकिम को स्वयं भाई होने के नाते प्रार्थना पत्र दिया । उस प्रार्थना पत्र को देखकर वहां के हाकिम की दृष्टि श्री मेहराज ठाकुर को मरवाने की हो गयी। उस बात की सूचना मिलने पर श्री मेहेराज ठाकुर रात्रि को ही बादशाह से फरियाद करने के लिए घर से निकल पड़े और प्रातः होने से पहले पहाड़ी क्षेत्र में पहुंच गए ।

इहां सेती जाए के, पहुंचे सुल्तान इमाम ।
फरियाद करी दो मास लों, बीच खेते के काम ॥१३॥

वहां से चलकर वह बगदाद जहां अरब की राजधानी थी, वहां बादशाह से खेता भाई के धन की फरियाद करने के लिए पहुंचे । दो माह तक दरबार में सब दरबारियों को प्रार्थना पत्र देने का प्रयास किया परन्तु किसी ने भी उनकी नहीं सुनी ।

जब उत से पीछे फिरे, एक मिला आरब ।
तिन आगे बीतक कही, तिन लिख दिया तब ॥१४॥

तब निराश होकर जब वे वापस लौट रहे थे तो रास्ते में आप श्री राजजी महाराज एक आरब का रूप धारण कर श्री मेहराज ठाकुर से मिले और निराशा का कारण पूछा । श्री मेहराज ठाकुर से सारी हकीकत को सुनकर उस आरब के भेष में आये हुए श्री राजजी महाराज ने एक पत्र लिख कर दिया ।

हिम्मत करके कहियो, जब निकसे सुल्तान ।
तब छेड़ा पकड़ के, ए सुनाइयो कान ॥१५॥

और उन्हें अच्छी तरह से समझा दिया कि बादशाह जब नमाज के लिए निकले तो डरे बिना हिम्मत करके उसका पल्ला पकड़कर मेरा पत्र उसे दे देना तथा सारा हाल कह सुनाना ।

मेरे गले में थी, सो मैं डालत हों गले तुम ।
लेऊं हिसाब रोज ईद के, जब होवे हक हुकम ॥१६॥

यह खेता बाई का कार्य, जो सतगुरू महाराज जी ने मुझे सौंपा था, वो आज मैं आपके जिम्मे सौंपता हूं । या तो आप मेरा न्याय कर दीजिए नहीं तो वक्त आखिरत को खुदा न्यायाधीश बनकर बैठेंगे तथा आप गुनहगारों की लाईन में खड़े होंगे । उस समय मैं तुम्हारा पल्ला पकड़कर खुदा से इन्साफ करा लूंगा।

Nijanand App

जब चला सुल्तान निमाज को, ए खड़े रहे बीच राह ।
धाए के दावन झटका, टूट गई कस ताह ॥१७॥

श्री मेहराज ठाकुर वापस लौट आये तथा बादशाह जब नमाज पढ़ने के लिए बाहर निकला तो ये पहले से ही राह में खड़े हो गये । जैसे ही बादशाह बाहर आया तो दौड़कर उन्होंने उसका पल्ला खींचा जिससे शाही लिबास शेरवानी (लम्बा कोट) की कश टूट गई ।

था इतमाम जोरावर, सब बरजे सुल्तान ।
ए कहो हकीकत अपनी, मैं सुनो अपने कान ॥१८॥

बादशाह के चारों ओर सुरक्षा का प्रबन्ध अति प्रबल था । ऐसा देखते ही सेना उनको मारने के लिए टूट पड़ी तो बादशाह ने तुरन्त ही सबको रोका और श्री मेहराज ठाकुर जी से सारी हकीकत पूछी कि तुम अपनी सारी बात कहो, मैं उसे सुनूंगा ।

ला तखोफ या बनी, कहो सब तेरी बात ।
तब रूक्का दिया हाथ में, कही सब विख्यात ॥१९॥

श्री मेहराज ठाकुर घबरा गये तो बादशाह ने कहा कि हे बेटा ! तुम डरो नहीं, मैं तुम्हारा न्याय करूंगा। तब उस आरब का दिया हुआ पत्र उस बादशाह को दे दिया और अपनी सब आपबीती कह सुनायी ।

मैं अपने गले का बोझ, सो डारत हों गले तुम ।
लेऊं हिसाब तुमसों, खुदाए के हुकम ॥२०॥

यह सब कार्य मेरे सतगुरू महाराज जी ने धर्मकार्य हेतु सौंपा था । उसे मैं आपको सौंपता हूं । हे बादशाह सलामत ! मेरा इन्साफ करो नहीं तो जब वक्त आखिरत को खुदा खुद न्यायाधीश के तख्त पर बैठेंगे, उस दिन मैं इन्साफ करा लूंगा ।

जब हाथ तुम्हारा हाथ में, होवेगा खुदाए के ।
इन्सा अल्ला ताला रोज ईद के, तब लेऊं दावन झटक के ॥२१॥

यदि आप मेरा न्याय नहीं करेंगे तो जब खुद खुदा आखिरत के समय में न्यायाधीश बनेंगे तथा आप गुनहगारों में खड़े होंगे तो खुदा के हुकम से ईद-उल-फितर (खुदा के इन्साफ का दिन) को आपका पल्ला पकड़कर इन्साफ कराऊंगा ।

तब जबाब सुल्तान नें, दिया योंकर इत ।
यह कलाम दुर्लभ, है बखत रोज क्यामत ॥२२॥

तब बादशाह ने दिल में सोचा कि क्यामत के दिन के इन्साफ की बात कहना हर मानव के वश की बात नहीं है और श्री मेहराज ठाकुर जी से कहा कि ऐसा लगता है कि तुम खुदा के वली हो ।

Nijanand App

छेड़ा झटका अपनो, देखा तरफ खुदाए ।
ए सुकन मुझको कबहूं, किनहूं न सुनाए ॥२३॥

बादशाह ने अपना पल्ला छुड़ाकर खुदा की तरफ ऊंचा मुंह करके देखा और खैर मांगी कि ए मेरे खुदा! मुझे शक्ति दो कि मैं इसका इन्साफ कर सकूं। ऐसा फरियादी कभी भी मेरे दरबार में अब तक नहीं आया।

मैं ऐता तुमको ना कहता, पर मुझ पर हुआ जुलम ।
मैं बहुत भटका, तब फरियाद करी आगे तुम ॥२४॥

तब श्री मेहराज ठाकुर जी ने कहा कि ऐ बादशाह सलामत ! ऐसा मैं आपको नहीं कहता परन्तु मैं विवश हो गया था। एक तो मेरे भाई की मृत्यु हो गयी, दूसरे मेरी कुल सम्पत्ति शेख सल्लाह ने जब्त कर ली है जिसके लिए मैं आपके दरबार में दो माह तक भटका हूं। जब मेरी फरियाद नहीं सुनी गयी तो मैंने इस तरह से आपका पल्ला झटका है।

इन्सा अल्ला ताला करे, मैं करों तेरा इन्साफ ।
तेरा तुझको दिलाऊं, कर दिया तोहे सब माफ ॥२५॥

बादशाह ने ऐसा सुनकर कहा कि अल्लाह तआला के हुकम से मैं अवश्य तुम्हारा न्याय करूंगा और तुम्हें सब कुछ मिल जायेगा। तुमने शिष्टाचार के विरूद्ध जो व्यवहार किया है उसे भी मैं क्षमा करता हूं।

ओ तो गया निमाज को, फेर ए आये अपने घर ।
हुआ बखत फजर का, भेजे चोपदार याद कर ॥२६॥

बादशाह नमाज पढ़ने गया और श्री मेहराज ठाकुर वापस अपने स्थान पर आ गए। दूसरे दिन प्रातः जब बादशाह अपने दरबार में गया तो एक सिपाही को हुकम दिया कि जिस व्यक्ति ने मेरा पल्ला झटका था, उसे बुला लाओ।

ल्याओ उस सख्स को, जिन दावन झटका बीच राह ।
इनका इन्साफ पहिले करों, ए है वास्ता खुदाए ॥२७॥

बादशाह ने हुकम दिया कि आज सबसे पहले उस व्यक्ति का इन्साफ करूंगा जिसने कल मेरा पल्ला झटका था और खुदा का वास्ता दिया था।

चोपदार पुकारता, कौन वह सख्स निसान ।
जिन इमाम को पकड़ा, फरियाद सुनाई कान ॥२८॥

ढिंढोरा देने वाला चोबदार गली गली में यह पुकार कर रहा था कि वह कौन सा व्यक्ति है जिसने कल बादशाह का पल्ला पकड़कर अपनी फरियाद सुनाई थी।

Nijanand App

श्री जी आप खड़े हते, कह्या वह सख्स हैं हम ।
दोऊ बाजू दो पकड़ के, खड़े किए तले हुकम ॥२९॥

श्री जी अपने निवास के सामने खड़े थे । उन्होंने कहा वह शख्स मैं हूं । दोनों सिपाहियों ने श्री मेहेराज ठाकुर को दोनों बाजुओं से पकड़ कर बादशाह के सामने खड़ा कर दिया ।

पहुंचे हजूर सुल्तान के, पूछी बात हिन्दुस्तान ।
हकीकत पूछी इसलाम की, यों कर कहे सुल्तान ॥३०॥

जब मेहेराज ठाकुर बादशाह के दरबार में गए तो बादशाह ने बहुत ही सम्मान के साथ उन्हें अपने पास बैठाया और पहले हिन्दुस्तान का हाल पूछा तथा दीने इसलाम की हकीकत पूछी । इस प्रकार आदर सहित बादशाह ने व्यवहार किया ।

राजी होए बातें करीं, तें क्यों फरियाद न करी दिवान ।
तब बचाया तिन को, मैं न सुनाई कान ॥३१॥

बहुत प्रसन्नता के साथ बातें करते समय बादशाह ने कहा कि आपने मेरे दीवान से फरियाद क्यों नहीं की ? तब मेहेरबान तो सदा मेहर ही करते हैं, तुरन्त दीवान के गुनाह को न देख कर उन्होंने बादशाह से कह दिया कि ए बादशाह सलामत ! मैंने किसी से फरियाद नहीं की ।

चौपाई : कोई देत कसाला तुमको, तुम भला चाहियो तिन ।
सरत धाम की न छोड़ियो, सुरत पीछे फिराओ जिन ॥

(किरंतन, प्रकरण ८६, चौपाई १६)

तब बहुत राजी भये, सेख सल्ला की करी फरियाद ।
उसी बखत हुकम हुआ, जाहिर उखाडूं बुनियाद ॥३२॥

श्री मेहराज ठाकुर के मुख से ऐसा जवाब सुन कर बादशाह बहुत प्रसन्न हुआ और शेख सल्लाह के बारे में जो फरियाद की थी, उसके विरूद्ध उसी समय सख्त हुकम दे दिया कि शेख सल्लाह ! तेरा व्यवहार बहुत गलत है । मैं तुझे जड़ से उखाड़ डालूंगा ।

सब मता इनका, सुनत दीजियो तुम ।
नातो मार उखाडों जड़मूल से, जो फेरे मेरा हुकम ॥३३॥

हे शेख सल्लाह । इस हुकमनामे को देखते ही श्री मेहराज ठाकुर को सम्पूर्ण मालमत्ता दे देना । यदि तुम मेरे हुकम को नहीं मानोगे तो तुम्हारे सारे परिवार को मरवा डालूंगा ।

Nijanand App

इन भांत लिख करके, दिया एक चोपदार ।
आये आगे खड़े रहे, सेख सल्ला के द्वार ॥३४॥

इतना सख्त हुकमनामा देकर एक सिपाही को भी श्री मेहराज ठाकुर के साथ भिजवा दिया । दोनों शेख सल्लाह के द्वार पर पहुंच गये ।

कागद दिया हाथ में, करियो इत सिताब ।
हुकम हुआ मुझको, इस सख्स के बाब ॥३५॥

तब सिपाही ने बादशाह का हुकमनामा शेख सल्लाह को देते हुए कहा कि श्री मेहराज ठाकुर का सम्पूर्ण मालमत्ता दे दो । मुझे इसी कार्य के लिये बादशाह ने भेजा है ।

तुरत कुंजी बखार की, और सामा सब ।
काढ़ के हाथों दई, ढील न करी तब ॥३६॥

शेख सल्लाह ने ऐसा सख्त हुकम पढ़ते ही कुल गोदामों की चाबी श्री मेहराज ठाकुर को बिना देर किये सौंप दी ।

सुनी बात श्री देवचन्द्र जी, भेजे बिहारी जी स्याम ।
पहुंचे आये बरारब, मुलाकात करी इस ठाम ॥३७॥

खेता भाई के धाम चलने की सूचना श्री मेहराज ठाकुर ने सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी को भेज दी। ऐसा दुःख भरा समाचार सुनते ही श्री देवचन्द्र जी ने अपने पुत्र बिहारी जी तथा श्री गांग जी भाई के बड़े पुत्र श्याम जी को अरब भेजा । दोनों ने अरब आकर श्री मेहराज ठाकुर से मुलाकात की ।

तब लेखा दिया हाथ में, पहुंची सब सामा ।
रोजनामा आगे रखा, जो लिखा था नामा ॥३८॥

तब श्री मेहराज ठाकुर ने चार वर्षों का सम्पूर्ण बहीखाता उन दोनों को दिखाया । जो उस तिथि तक नकद बचत थी, उन को सौंप दी तथा जो लेना था वह भी बता दिया । और जो सामान शेख सल्लाह के द्वारा जला कर नष्ट कर दिया गया था, वह भी बता दिया ।

सब मेहनत अपनी, कर दिखाई बात ।
पर इनों का कुफर, क्योंये कर न जात ॥३९॥

इन चार वर्षों में कठिन परिश्रम के साथ और बादशाह तक फरियाद करने का सब बेवरा कह सुनाया। पर इन दोनों के दिल में यह कुफर बैठ गया कि शेख सल्लाह ने कोई सामान नहीं जलाया है बल्कि श्री मेहराज ठाकुर ही खा गये हैं ।

Nijanand App

इहां सेती फेर के, आये पुरी नवतन ।
चुगली बालबाई करी, सुनाई जाम के कान ॥४०॥

वे दोनों जब वापस आये तो बिहारी जी ने श्री देवचन्द्र जी से तथा स्याम जी ने गांगजी भाई से उल्टा ही बताया कि श्री मेहराज ठाकुर ने सारा धन हड़प लिया है परन्तु श्री देवचन्द्र जी एवं गांगजी भाई ने उनकी बातों पर विश्वास नहीं किया । तब उन दोनों ने मिलकर बालबाई जो गांगजी तथा खेताभाई की बहन थी, उन्हें श्री मेहराज ठाकुर के विरूद्ध उकसाया । तब बालबाई ने स्त्री बुद्धि होने के कारण वहां के राजा को श्री मेहराज ठाकुर के विरूद्ध प्रार्थना पत्र दे दिया ।

सम्वत सत्रह सै अठोत्तरे, हुआ ए मजकूर ।
सब सामा गई रावर में, जिनके लिखी अंकूर ॥४१॥

जब श्री मेहराज ठाकुर संवत् १७०८ में बाकी सामान जहाज पर लाये तो वहां के राजा ने पहले ही चौकी बैठा रखी थी और वह कुल सामान राजा के खजाने में चला गया । अनीति से कमाया हुआ धन धर्म के कार्य में न आकर राजा के खजाने में चला गया । तब श्री मेहराज ठाकुर श्री देवचन्द्र जी को प्रणाम करने गये तो देखा कि बालबाई कुंए के किनारे पर आत्महत्या करने के लिये खड़ी है । उसने श्री देवचन्द्र जी से पहले ही कह दिया था कि यदि ऐसे चोर मेहराज ठाकुर, जिसने मेरे भाई का धन हड़प लिया है, उनका प्रणाम आप स्वीकार करेंगे तो मैं कुंए में छलांग लगा दूंगी । इसलिये श्री देवचन्द्र जी ने उनका प्रणाम स्वीकार नहीं किया और मुख पर परदा डाल लिया ।

चौपाई : तमें पड़दा पाछा कीधा पछी, वली आवी ते आ वसंत ।
ते पछी तमसू रमवानी, लागी छे खरी मूने खंत ॥

(खटरूती ५/२)

इहां नौतनपुरी मिने, रहे बरस दोय ।
गये न श्री देवचन्द्र जी पास, हरख मिलने को बड़ो होय ॥४२॥

श्री मेहराज ठाकुर निराश हो कर अपने घर आ गये और दो वर्ष घर में रहते हुए भी श्री देवचन्द्र जी के दर्शनों के लिये नहीं गये । परन्तु उनके दर्शनों के लिये मन में तीव्र चाहना लगी हुई थी ।

भांत भांत बिलखे वहां, घर के बीच में आप ।
न वे बुलावे न ए जाय, तो क्यों कर होय मिलाप ॥४३॥

अब हर समय अपने घर के अन्दर विरह में बिलखते रहे । न तो श्री देवचन्द्र जी ने बुलाया और न वे मिलने ही गये । इसलिये मिलाप नहीं हो सका ।

Nijanand App

देखो जोर ए माया को, दिखावे धनी धाम ।
हल्की याको जिन गिनो, याके रंग में बहो न ठाम ॥४४॥

हे सुन्दरसाथ जी ! यह माया कितनी बल वाली है जो हमको श्री राजजी महाराज दिखा रहे हैं । इस माया को साधारण (मामूली) न समझ लेना । इस माया के रंग (बहाव) में बह जाने पर कोई भी ठिकाना नहीं मिलता है ।

खट ऋतु में साथ को, कह्या सभी ए खोल ।
सिखापन विध-विध के, साथ वास्ते कहे बोल ॥४५॥

इस प्रसंग की कुल हकीकत श्री कुलजम स्वरूप की खटरूती के पांचवें प्रकरण में खोल कर कह दी गई है और सुन्दरसाथ को उसमें हर तरह से सिखापन के शब्द कह दिये हैं कि धाम धनी के चरणों से मरने तक भी विमुख नहीं होना ।

एक दिन भौजाई के, वचन ताने के जोर ।
तब प्रात उदास होए के, गए धरोल आप कर जोर ॥४६॥

घर पर रहते समय सांवलिया ठाकुर की धर्मपत्नी जो श्री मेहेराज ठाकुर की भाभी थी, उसने यह ताना मारा कि आप जिस सतगुरू के बदले अपने भाई को मारने के लिए दौड़े थे, यदि वह जिन्दा नहीं होता तो आज किसकी कमाई खाते । इस बात से दुःखी होकर अगले दिन प्रातः ही नौतनपुरी छोड़कर धरोल राज्य चले गये ।

इहां सेती फेर के, गये कलाजी पास ।
तहां जाए रोजगार की, दिल में राखी आस ॥४७॥

फिर वहां जाकर वहां के राजा कलाजी के पास रोजगार की इच्छा प्रकट की ।

कलाजी के पास, रहे बरस दोय ।
या उपरान्त गुजरात, आठ महीने रहे सोय ॥४८॥

कलाजी ने उनको अपने पास दीवान पद पर रख लिया और वहां उन्होंने दो वर्ष तक दीवानगिरी के पद पर कार्य किया । उसके पश्चात् दीवान पद होने के कारण अपने राज्य का कर (टैक्स) चुकाने के वास्ते अहमदाबाद गये । उस कार्य में उनको वहां पर आठ महीने लग गये ।

Nijanand App

फेर आये गुजरात से, कला पे मांगी बखसीस ।
सम्बत सत्रह सै बारोत्तरे, अब मैं पाऊं सीख ॥४९॥

फिर अहमदाबाद में बादशाह के दरबार में बार-बार झुकने पर उन्हें ठेस लगी कि ऐसे झूठे बादशाहों के सामने झुकने से तो अपने सद्गुरू के सामने ही झुकना अच्छा है । उन्हें सद्गुरू महाराज की याद तड़पाने लगी । इसलिए कला जी के पास संवत् १७१२ में आकर अपने पद से त्यागपत्र (राजीनामा) दे दिया कि अब मैं नौकरी से छुट्टी चाहता हूं ।

अब मोसों दुनियां का, होय नहीं बेवहार ।
एक दिल एकान्त में, सेवों धनी निरधार ॥५०॥

उन्होंने कला जी से स्पष्ट कह दिया कि इस दुनियां का झूठा कार्य व्यवहार मुझसे नहीं होता । मैं चाहता हूं कि अब मैं एकान्त में अपने उस धनी की सेवा करूं ।

तब कला जी ने कह्या, तेरा है अखत्यार ।
जिन्हें जानो तिन्हें सौंप द्यो, सो चलावे कार वेहेवार ॥५१॥

तब कला जी ने कहा कि हे मेहराज ठाकुर ! नये आदमी को अपने स्थान पर रखने का भी अखत्यार तुम्हें देता हूं । पर ऐसा आदमी चाहिए, जो तुम्हारे जैसा ही कार्यभार संभाल सके ।

इन समै श्री देवचन्द्र जी की, फिरी सुरत निजधाम ।
बुलाय ल्याओ श्री मेहेराज को, मेरे हजूर इस ठाम ॥५२॥

उधर संवत् १७१२ में श्री देवचन्द्र जी महाराज के तन छोड़ने का समय आ गया । इसलिये उन्होंने सब सुन्दरसाथ से कहा कि तुम में से कोई भी जा कर श्री मेहराज ठाकुर को बुला कर लाये ।

आई बालबाई बुलावने, तिनको दिया जवाब ।
मैं काम छुड़ाय के, आवत हों सिताब ॥५३॥

श्री देवचन्द्र जी महाराज की इस बात को सुन कर बालबाई, जिसको अब अपनी भूल का पता चल चुका था कि मेरे कारण ही श्री मेहराज ठाकुर को कष्ट पहुंचा है, तुरन्त ही कला जी के पास गई। तो श्री मेहराज ठाकुर ने उत्तर दिया कि- हे बालबाई ! तुम चिन्ता न करो । मैं शीघ्र ही अपनी जगह दूसरे व्यक्ति को सौंपकर सद्गुरू महाराज जी के चरणों में आने वाला हूं ।

Nijanand App

फेर बिहारी जी आए, मांगी अम्बर कस्तूरी ।
सुन बिहारी जी की बात, दिल बीच धरी ॥५४॥

कुछ दिन बीतने पर जब मेहराज ठाकुर नहीं आये तो श्री देवचन्द्र जी ने बिहारी जी को उन्हें बुलाने के लिए भेजा । बिहारी जी ने श्री मेहेराज ठाकुर से बुलाने का प्रसंग ही नहीं छेड़ा बल्कि यह कहा कि पिताजी ने अम्बर और कस्तूरी मंगाई है । श्री मेहेराज ठाकुर बिहारी जी की बात को सुनकर उनके दिल के भाव को जान गये और उस बात को अपने दिल में रख लिया ।

मंगाय कस्तूरी अम्बर, लै करी हाजर ।
मैं भी कदमों तले, आवत हों फजर ॥५५॥

अम्बर (इत्र) और कस्तूरी मंगाकर दे दी और बिहारी जी को यह कह दिया कि सतगुरू महाराज जी से कह देना कि मैं कल तक उनके चरणों में हाजिर हो जाऊंगा ।

अपना काम काज सब, किया छोड़ने का उदम ।
मैं इहां से फारक होय के, पहुंचों आय कदम ॥५६॥

तब श्री मेहेराज ठाकुर ने अपना काम छोड़ने का उपाय किया कि मैं जल्दी से अपने काम से फारिग होकर सतगुरू महाराज के चरणों में हाजिर हो जाऊं ।

यों करते बिहारी जी को, फेर के भेजे श्री राज ।
तुम सिताबी जाय के, ल्याओ बुलाए श्री मेहेराज ॥५७॥

इतने में श्री देवचन्द्र जी ने बिहारी जी को श्री मेहराज ठाकुर को बुलाने के लिये फिर भेजा ।

वे कहते सैयन को, सिंध की भाखा मों ।
मुंह मुंह कोड़ मत्थन, मैं बातें करों तिन सों ॥५८॥

श्री देवचन्द्र जी ने कहा कि तुम उस मेहराज ठाकुर को बुला कर लाओ, जो सिन्धी भाषा में सद्गुरू के प्रति भजन बना कर सुन्दरसाथ को सुनाया करते थे कि मेरे एक एक मत्थे पर करोड़-करोड़ मुख हो जाय ।

जान हुन कोड़ धड़, धड़ धड़ कोड़ मत्थन ।
मत्था मत्था कोड़ मुंह, मुंह मुंह कोड़ जिभ्भन ॥५९॥

भजन में यह भी था कि मेरे जीव के यदि करोड़ धड़ हो जाएं तथा एक-एक धड़ पर कोटि-कोटि मत्थे हो जायें और एक-एक मत्थे पर कोटि कोटि मुंह हो जाय तथा एक-एक मुंह में यदि कोटि कोटि जिभ्याएं हो जाए ।

Nijanand App

हितरा मिडी तोहिजा, तांजे गुण गिनन ।
भाल तोहिजे हिकड़ी, पुजी ते न सगन ॥६०॥

इतनी जिभ्याओं से भी हे सद्गुरू महाराज ! यदि मैं आपके गुण गिनना चाहूं तो गुणों की गिनती कैसे हो सकती है ? केवल अपनी अंगना जान कर चरणों में लिया है, इस एक बात का भी बयान नहीं कर सकते हैं ।

आये बिहारी जी फेर के, बात कही इसारत ।
बाप को दुखत है, कछु औषधि चाहिए इत ॥६१॥

बिहारी जी महाराज बुलाने के लिये तो आये लेकिन यही कहा कि पिताजी का स्वास्थ्य ठीक नहीं है। इसलिये कुछ औषधि चाहिए ।

तब कह्या श्री मेहेराज ने, मैं आवत हों उत ।
कछुक काम रह्या है, मैं उसके गले डालत ॥६२॥

जो औषधि उन्होंने कही थी मंगा कर दे दी तथा यह भी कह दिया कि आप सद्गुरू महाराज जी से कह देना कि मैंने अपने स्थान पर दूसरा आदमी रख लिया है और शीघ्र ही अपना कार्यभार उसे सौंप कर आ रहा हूं ।

श्री देवचन्द्रजी के दिल में, रही बात अटक ।
फेर फेर कहे बुलाओ, मेहेराज रहे खटक ॥६३॥

जैसे-जैसे धाम चलने का समय निकट आ रहा है, वैसे-वैसे श्री मेहराज ठाकुर को जल्दी बुलाने की बात श्री देवचन्द्र जी के मन में खटक रही है और वे कहते हैं कि मेहराज ठाकुर को जल्दी बुलाओ । जल्दी बुलाओ ।

तब बिहारी जीएं कह्या, तुम फेर फेर करत याद ।
हम तो कहि कहि थके, तुम फेर फेर करत बाद ॥६४॥

तब बिहारी जी ने श्री देवचन्द्र जी को उत्तर दिया कि हे पिता जी ! आप जिस मेहराज ठाकुर को बार-बार याद करते हैं हम तो उन्हें बुलाने के लिये कह-कह कर थक गये है और वे नहीं आना चाहते हैं तो आप क्यों बार-बार उन्हीं को बुलाने की बात करते हैं ।

तब बिहारी जी को कह्या, तुम बुलाय ल्याओ इन ।
मैं धाम दरवाजे पैठ ना सकों, ठाढ़ी इन्द्रावती करे रूदन ॥६५॥

तब सद्गुरू श्री देवचन्द्र जी ने बिहारी जी से स्पष्ट कह दिया कि तुम मेहराज ठाकुर को जल्दी बुला कर लाओ । मैं उनके बिना धाम नहीं जा सकता हूं क्योंकि श्री इन्द्रावती जी की आतम रास्ते में खड़ी रूदन कर रही है ।

Nijanand App

यह बचन सुन के, बालबाई पहुंची धाय ।
मेहेराज तुम्हें क्या हुआ, एते बुलावने आय ॥६६॥

सद्गुरू महाराज के ऐसे दुःख भरे वचन सुन कर बालबाई मेहराज ठाकुर के पास आई और कहा कि इतनी बार आपको बुलाया गया है किन्तु यदि आप मेरी वजह से नहीं आ रहे हैं तो मुझे क्षमा करें ।

श्री देवचन्द्र जी तुमको, याद करें फेर फेर ।
मैं धाम जाय ना सकों, रह्या इन खातर ॥६७॥

सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी महाराज आपको बार-बार याद कर रहे हैं और कह रहे हैं कि मैं मेहराज ठाकुर के आये विना धाम नहीं जा सकता हूं ।

तब श्री मेहेराज नें कह्या, मोसों कही न किन ए बात ।
मैं तो तब हीं आवत, जो एती जानों विख्यात ॥६८॥

तब श्री मेहेराज ठाकुर जी ने उत्तर दिया कि मुझसे ऐसी बात तो आज दिन तक किसी ने भी नहीं कही । यदि मुझे पहले पता चल जाता तो मैं सब कुछ छोड़कर उनके चरणों में हाजिर हो जाता ।

तब कार भार सब डार के, हुये बिदा सिताब ।
आप रहते थे जिनके, तिनको दे आये जवाब ॥६९॥

तब उसी समय कलाजी के पास जाकर त्याग पत्र दे आये और जिस आदमी को अपने पास रखा था, उसके ऊपर सब कुछ सौंपकर सतगुरू महाराज के चरणों में पहुंचने के लिए विदा हुए ।

सम्वत सत्रह सै बारोत्तरे, श्रावन वदि अस्टमी ।
मिलाप श्री देवचन्द्र जी सों, कहों बात जमी ॥७०॥

सम्वत् १७१२ में सावन माह की वदी अष्टमी को श्री देवचन्द्र जी के चरणों में प्रणाम किया । फिर क्या हुआ वह बताता हूं ।

महामति कहे ए साथ जी, ए नवतन पुरी की बीतक ।
याद करो इन समय को, सो भान देऊं सब सक ॥७१॥

अब आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फरमाते हैं कि यह नौतनपुरी की हकीकत है । इस प्रसंग को याद करना । इस प्रसंग में जो संशय वाली बात है, उसे मिटा देता हूं ।

(प्रकरण १५, चौपाई ६९१)

Nijanand App